बात बोलेगी

सत्यम श्रीवास्तव

बात बोलेगी

सत्यम श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फरवरी, 2023

© सत्यम श्रीवास्तव

अंदर की बात

संपादक की बात

बात से थोड़ा पहले, अपनी बात

सबकी बात

पहली लहर

भेद खोलेगी बात ही… 17

राह भटकी ट्रेन, बीमार 'योद्धा', पैदल जनता बनाम एक जोड़ी जूता 22

मानवीय त्रासदी में स्थितप्रज्ञ व संवेदनहीन लोक के शास्त्रीय बीज 28

स्मृतियाँ जब हिसाब मांगेंगीं… 34

किरायेदारों के ज़ाती मकान नहीं होते… 40

'लोया हो जाने' का भय और चुनी हुई चुप्पियों का साम्राज्य 45

सहृदय बनाने के सारे प्रशिक्षण केन्द्रों पर जबर ताले लटके हुए हैं 51

चढ़ी हुई नदी के उतरने का इंतज़ार लेकिन उसके बाद क्या? 57

नये युग का करें स्वागत… 63

लोकतंत्र के ह्रास में बसी है जिनकी आस 70

जबरा मारे औ रोऊन न देय 76

अगस्त धुआँ है, कोई आसमान थोड़ी है…! 83

'प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया' से 'प्रतिक्रिया ही प्रतिक्रिया' तक 90

महापलायन की 'चांदसी' तक़रीरों के बीच फिर से खाली होते गाँव 96

झूठ की कोई इंतिहा नहीं… 102

भारतेन्दु की बकरी से बाबरी की मौत तक गहराता न्याय-प्रक्रिया का अंधेरा 108

इंस्पेक्टर मातादीन की वापसी उर्फ़ इंस्पेक्टर मातादीन रिटर्न्स 115

एक 'सिविल सोसायटी' के राज में दूसरे का 'वध' और तीसरे का मौन 126

'टिकाऊ' और 'बिकाऊ' बटमारों के दो लोकतांत्रिक शगल 134

मैं दुनिया के मेयार पर खरा नहीं उतरा, दुनिया मेरे मेयार पर खरी नहीं उतरी… 142

जीत के सौ अभिभावक और हार का अनाथ हो जाना 151

'लव जिहाद' के सरपट घोड़े, दौड़े.. दौड़े… दौड़े… 159

मास्क लगाएं, हाथ धोएं, देह दूरी बनाए रखें, वैक्सीन का इंतज़ार करें, और क्या? 166

उत्तरायण

जो सीढ़ी ऊपर जाती है, वही सीढ़ी नीचे भी आती है! 176

'ज़रूरत से ज्यादा लोकतंत्र' के बीच फंसा एक सरकारी 'स्पेशल पर्पज़ वेहिकल'! 182

अब मामला उघाड़ने और मनवाने से नाथ घालने तक आ चुका है! 188

सब कुछ याद रखे जाने का साल 202

जनता निजात चाहती है, निजात भरोसे से आता है, भरोसा रहा नहीं, भक्ति कब तक काम आएगी? 209

'अपहृत गणराज्य' की मुक्ति की सम्भावनाओं का उत्तरायण! 225

एतबार की हद हो चुकी बंधु! चलिए अब 'ओन' किया जाए… 233

त्रेता और द्वापर के लोकतांत्रिक कड़ाहे में लीला और मर्यादा का 'डिस्ट्रक्टिव' पकवान 239

हिंदू थक कर सो गया है तब तो ये हाल है, जागेगा तो क्या होगा डाक साब? 247

बिजली, पानी और 45 करोड़ की देशभक्ति मुफ़्त, मुफ़्त, मुफ़्त! 254

दांडी की हांडी में पक रहा है "नियति से मिलन" का संदेश! 260

जो जीता वही सिकंदर, जो हारा वो जंतर-मंतर! 268

कश्मीर में बैठ के कश्मीर को समझने का अहसास-ए-गुनाह 277

जो संस्थागत है वही शरणागत है! 283

दूसरी लहर

वबा के साथ बहुत कुछ आता है और जाता भी है! 292

भंवर में फंसी नाव के सवार 301

दिल्ली 'ज़फ़र' के हाथ से पल में निकल गई… 308

जीने के तमाम सुभीते मरने की आस में मर गए… 315

बीतने से पहले मनुष्यता की तमाम गरिमा से रीतते हुए हम… 322

खुलेगा किस तरह मज़मूं मेरे मक्तूब का या रब… 331

परेशानियों को पहचानने की सलाहियत से महरूम सरकार पर मुस्कुराता बुद्ध का चाँद 337

बारहवीं की सरकारी तेरहवीं और मेरिटोक्रेसी का मिडिल क्लास अचार 344

सब सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है 351

नये भारत' के नागरिकों के लिए क्यों न एक भयदोहन कोष बनाया जाए! 358

एक दूजे की प्रार्थनाओं और प्रतीक्षाओं में शामिल हम सब… 363

इंतज़ार

जिन्हें कहीं नहीं जाना, उन्हें यहीं पहुंचना था…! 370

आप पहले पैदा हो गए हैं, केवल इसलिए आगे किसी और के पैदा होने का अधिकार छीन लेंगे? 377

आदिम शिकारियों के कानूनी जंगल में 'मादा' जद्दोजहद के दो चेहरे 385

'लोक' सरकारी जवाब पर निबंध रच रहा है, 'तंत्र' खतरे के निशान से ऊपर बह रहा है! 400

बिगड़ा हुआ है रंग जहान-ए-ख़राब का… 409

पापड़ी चाट के बहाने ताज़ा बौद्धिक विमर्श 415

‘कम्पल्शन’ के दरबार में ‘कन्विक्शन’ का इकरार 422

अपने-अपने तालिबान… 429

बिकवाली के मौसम में कव्वाली 437

क्या आप प्रबुद्ध वर्ग से हैं? तो जज साहब का कहा मानिए… 444

पालतू गर्वानुभूतियों के बीच खड़ी हिंदी की गाय 450

खतरे में पड़ा देश, खतरों के खिलाड़ी और बचे हुए हम! 456

बिजली आ गयी है, लेकिन अर्द्ध-सत्य का अंधेरा कायम है! 465

एक सौ चालीस करोड़ की सामूहिक नियति के आर-पार एक ‘थार’ 472

बहुमत का बुलडोज़र

विस्मृतियों के कृतघ्न कारागार में एक अंतराल के बाद 479

‘प्रथम दृष्ट्या’ की कानूनी पुष्टि के इंतज़ार में… 487

क्योंकि आवाज़ भी एक जगह है… 492

फिर इस मज़ाक को जम्हूरियत का नाम दिया… 498

फिर आया लोकतंत्र के कर्मकांड का मौसम… 504

मेरे तक आवाज़ आ रही है? आप लोग रोना बंद कीजिए… 509

चुनाव लोकतंत्र में आपातकाल है या आपातकाल में लोकतंत्र? 517

सूचनाओं के प्रवाह में जवाब देने की मजबूरी 523

तीन करोड़ की शपथ और अगले बुलडोजर का इंतज़ार 530

शामतों के दौर में… 536

अच्छाई और ताकत के बीच नितांत अकेला और शांत खड़ा हसदेव अरण्य 543

लोकतंत्र का ‘बुलडोज़र’ पर्व 549

संस्कृति के काक-तालीय दर्शन में फंसी राजनीति 555

जेहि ‘विधि’ राखे राम ताहि ‘विधि’… 563

उनकी बात

काया की कराह और निज़ामे मुल्क की आह के मद्देनज़र एक तक़रीर… 570

सुबह से शाम, ‘सुरों के नेता’ का हर एक काम देश के नाम… 577

मन की बात या एकालाप? 583

‘लोकल’ से ‘बोकल’ को समझने की एक कोशिश 589

महबूब की मेहंदी रंग लायी! मितरों… लख लख बधाई! 594

मुखिया ‘मुख’ सों चाहिए… 599